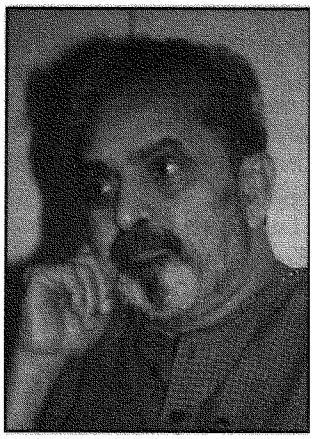

यू.आर. अनंतमूर्ति
U.R. ANANTHA MURTHY

प्रो. उडुपी राजगोपाला आचार्य अनंतमूर्ति, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपनी महत्तर सदस्यता से विभूषित कर रही है; उन महत्त्वपूर्ण भारतीय लेखकों में से हैं, जिनके उपन्यासों, कहानियों, कविताओं और समालोचनात्मक लेखन के माध्यम से कन्नड साहित्य में एक अनूठे ढंग से आधुनिकतावाद का प्रवेश हुआ। सर्जनात्मक लेखन के अतिरिक्त साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने बहुमूल्य योगदान और पर्यायवरण-संरक्षण, सांप्रदायिक सौहार्द जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों से संबंधित अपनी प्रतिबद्ध सामाजिक गतिविधियों के लिए आप सुविख्यात हैं।

यू.आर. अनंतमूर्ति का जन्म कर्नाटक के शिमोगा ज़िले के मेलिगे नामक गाँव में 21 दिसंबर 2004 को हुआ। आपकी शिक्षा-दीक्षा गाँव के *वेद पाठशाला* तीर्थहल्ली, शिमोगा, मैसूर और बरमीहाम् (इंग्लैंड) में हुई। आपने मैसूर विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए. किया और स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1956 से 1963 तक आप वहाँ एक लेक्चरर के रूप में कार्यरत रहे। 1955 में आपका पहला कन्नड कहानी-संग्रह *एन्देन्दु मुगियाड कथे* और 1963 में आपका पहला कविता-संग्रह *बवाली* प्रकाशित हुआ। उसी वर्ष आपको कॉमन-वैल्थ फ़ेलोशिप मिली और आप बरमीहाम् विश्वविद्यालय में पी-एच.डी. के अध्ययन के सिलसिले में इंग्लैंड चले गए। 1966 में शोध ग्रंथ *पॉलिटिक्स एंड फ़िक्शन इन द 1930'ज* के लिए आपको पी-एच.डी. की उपाधि दी गई। वहीं आपका पहला उपन्यास *संस्कार* लिखा गया जिसने कन्नड कथा साहित्य का चेहरा हमेशा के लिए बदल दिया और इसका प्रकाशन आधुनिक भारतीय साहित्य के इतिहास में एक प्रमुख घटना सिद्ध हुआ।

कर्नाटक लौटने पर 1967-70 के दौरान आप रीजनल कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, मैसूर में अंग्रेज़ी के रीडर के रूप में अध्यापन करते रहे। तत्पश्चात् आप प्रोफ़ेसर होकर मैसूर विश्वविद्यालय चले गए। 1987 में आपको महात्मा गाँधी विश्वविद्यालय, कोट्टयम, केरल में कुलपति नियुक्त किया गया। 1991 तक आप उसी पद पर कार्यरत रहे। 1992 में आपको नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत का अध्यक्ष नामित किया गया और 1993 में आप साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष चुने गए। 2002 में आप फ़िल्म एंड टेलीविज़न इंस्ट्टीयूट ऑफ़ इंडिया, पुणे के अध्यक्ष नियुक्त हुए और अभी भी आप इस पद पर बने हुए हैं। इस बीच आप 2003 में स्कूल ऑफ़ एजुकेशन के अध्यक्ष रहे। संप्रति आप केन्द्रीय शिक्षा परामर्श मंडल, भारत सरकार के सदस्य हैं।

संस्कार के बाद अनंतमूर्ति ने चार और उपन्यास लिखे : *भारतीपुरा* (1973), *अवस्थे* (1978), *भव* (1997) और दिव्या (2001)। कहानी संग्रह

Professor Udupi Rajagopala Acharya Anantha Murthy, on whom the Sahitya Akademi is conferring its Fellowship today, is one of the most eminent Indian writers who presided over high modernism in Kannada literature in a unique manner through his novels, short stories, poetry and critical writing. Besides creative writing, he is well-known for his valuable contributions to culture and education and for his committed social activities on issues of vital importance—conservation of environment, communal harmony and several others.

U.R.Anantha Murthy was born in a little village called Melige in Shimoga District, Karnataka, on 21.12.1932. He had his education in the village *Veda Pathsala,* Tirthahalli, Shimoga, Mysore and Birmingham (U.K.) A Gold Medallist for M.A. in English from Mysore University, he served there as a lecturer in English from 1956 to 1963. In 1955, his first short-story collection in Kannada, *Endendu Mugiyada Kathe,* was published. In 1963, his first collection of poems, *Bavali,* came out. In the same year, he got the Commonwealth Fellowship and went to U.K. to pursue doctoral studies in Birmingham University. In 1966, he was awarded Ph.D for his thesis, *Politics and Fiction in the 1930s.* There, his first novel, *Samskara,* was born, which changed the face of Kannada fiction forever and proved to be a major event in the history of modern Indian literature.

Returning to Karnataka, he resumed teaching as a Reader in English in the Regional College of Education, Mysore, during 1967-70, and then in the University of Mysore where he became Professor, until 1987 when he was appointed Vice-Chancellor, Mahatma Gandhi University, Kottayam, Kerala, a post he held till 1991. He was nominated Chairman, National Book Trust, India, in 1992 and elected President of the Sahitya Akademi in 1993. In 2002, he has been appointed Chairman, Film and Television Institute of India, Pune, which position he still holds. In the meanwhile, he chaired the School Education Commission, Kerala, in 2003; presently he is Member, Central Advisory Board for Education, Government of India.

After *Samskara*, Anantha Murthy has authored four more novels, *Bharatipura* (1973), *Avasthe* (1978) *Bhava* (1997) and *Divya* (2001). Since the publication of *Endendu Mugiyada Kathe*, Anantha Murthy brought out six more short-story collections, *Prasne* (1962), *Mauni* (1972), *Akasha Mattu Bekku* (1981), *Eradu Dashakada Kathegalu* (1981) *Mooru Dasakada Kathegalu* (Selected Stories,1989)and *Suryana*

एन्देन्दु मुगियाड कथे के बाद अनंतमूर्ति के छह और कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए : *प्रश्ने* (1962), *मौनी* (1972), *आकाश मट्टु बेक्कु* (1981), *एरडु दशकदा कथेगळु* (1981), *मूरू दशकदा कथेगळु* (चुनी हुई कहानियाँ, 1998), *सूर्यन कुदुरे* (1995)। *बवाली* के बाद आपके तीन कविता-संग्रह और प्रकाशित हुए : 15 *पद्यगळु* (1970), *अज्जना हेगला मेलिना सुक्खुगळु* (1989), *मिथुना* (1992)। आपके कई निबंध संग्रह और समालोचनात्मक कृतियाँ प्रकाशित हैं, जिनमें से कुछ हैं : *प्रज्ञने मट्टु परिसर* (1974), *सन्निवेश* (1974), *समाक्षम* (1980), *पूर्वापर* (1989), *युग पल्लात* (2001) आदि। आपका एक नाटक *आवाहने* (1968) प्रकाशित है। लाओत्से कृत *ताओ ते चिंग* का अनुवाद *दाओ द जिंग* 1994 में प्रकाशित हुआ। आपने नेशनल बुक ट्रस्ट के लिए *कन्नड काव्य* (1992) का संपादन किया। आपकी कहानियाँ, कविताएँ और निबंध अनेक पुस्तकों में संकलित हैं, यथा : ऐदु दशकदा कथेगळु (चुनी हुई कहानियाँ 2000), *इवरेजिनल कवितेगळु* (चुनी हुई कविताएँ, 2001) *कन्नड कर्नाटका* (चुने हुए निबंध 2001)।

भारतीपुरा और *अवस्थे* का हिन्दी अनुवाद मलयाळम् और अंग्रेज़ी में प्रकाशित है। *भव* और उनका एक कहानी संग्रह *द स्टेलियन ऑफ़ सन एंड अदर स्टोरीज़* (1999) के नाम से प्रकाशित है। *दिव्या* का अनुवाद मलयाळम् में हुआ है।

अनंतमूर्ति ने शताधिक महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लिया। बंगलौर विश्वविद्यालय में अनेक संगोष्ठियों में आपने महत्त्वपूर्ण कन्नड लेखकों पर व्याख्यान दिए हैं। आप समकालीन मुद्दों पर बराबर अपने विचार रखते रहे हैं, केरल में साहित्यिक और राजनैतिक सम्मेलनों में भाग लेते रहे हैं और पीपुल्स यूनियन ऑफ़ सिविल लिबर्टीज के कर्नाटक इकाई के महासचिव के रूप में आपने नागरिक स्वतंत्रता पर व्याख्यानों की एक शृंखला प्रस्तुत की है। वैश्वीकरण के संबंध में कर्नाटक और इसकी भाषा एवं संस्कृति के भविष्य को लेकर आपने लेखकों और अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ संवाद किया है। आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रमों के लिए मास्ति वेंकटेश अयंगार, गोपालकृष्ण अडिग, शिवराम कारंत और आर.के. नारायण से आप द्वारा लिए गए साक्षात्कार अविस्मरणीय हैं।

अनंतमूर्ति के उपन्यासों में सबसे अधिक चर्चा *संस्कार* को लेकर हुई। इस पहले उपन्यास ने आपको विश्वस्तरीय लेखक के रूप में स्थापित किया। ऐरिक एरिक्शन और वी.एस. नायपॉल जैसी हस्तियों ने इसकी प्रशंसा की। अपने प्रकाशन के समय से ही यह कृति अत्यंत विवादास्पद रही और इसे एक रूढ़िभंजक कृति माना गया; साथ ही इसे एक नए पथ का अन्वेषी उपन्यास और बाद में कन्नड आधुनिकतावाद के शिखर के रूप में चिह्नित किया गया। ए.के. रामानुजन इसे एक रूपक मानते हैं जो यथार्थवादी विवरणों से समृद्ध हैं। वह कहते हैं 'बर्गमैन की किसी प्रारंभिक फ़िल्म की तरह इसके पात्र स्पष्टतः रूपकात्मक हैं लेकिन इनकी सैटिंग यथार्थवादी है। स्पेस, समय और समाज के अल्प विवरणों में एक सूक्ष्म मानवीय विषय-वस्तु का चित्रण किया गया है। खुले हुए अंतवाला यह उपन्यास परिवर्तन की एक स्पष्ट पुकार है, जो एक क्रांतिकारी की आशा को उद्घाटित करता है जिसका विश्वास है कि स्थापित व्यवस्था का विध्वंस सार्थक है, अगर एक नई और बेहतर व्यवस्था निर्मित की जा सके। *संस्कार* के अनुवाद हिन्दी, अंग्रेज़ी, मलयाळम्, बाङ्ला, मराठी, तमिष़, फ्रांसीसी, रूसी, जर्मनी, हंगारी और स्वीडिश भाषाओं में हुए हैं। भारत और विदेश के कई विश्वविद्यालयों में यह उपन्यास पाठ्य पुस्तक के रूप में रहा है। 1970 में *संस्कार* पर एक फ़िल्म बनी जिसे दक्षिण में नए सिनेमा की शुरुआत माना गया। फ़िल्म को राष्ट्रपति का स्वर्णपदक प्राप्त हुआ और लेखक को सर्वोत्कृष्ट कथा पुरस्कार।

भारतीपुरा में अनंतमूर्ति *संस्कार* में निहित अपने रूपकात्मक और अस्तित्वपरक एप्रोच से आगे बढ़ते हैं और यथार्थवाद का सीधा सामना करते

Kudure (1995). After *Bavali*, three more collections of poetry, *15 Padyagalu* (1970) *Ajjana Hegala Melina Sukkugalu* (1989) and *Mithuna* (1992) came out. He has collections of essays on general topics and criticism run into several volumes, some of which are: *Prajne Mattu Parisara* (1974), *Sannivesa*(1974), *Samakshama* (1980), *Purvapara* (1989), *Yuga Pallata* (2001) etc. He has one play, *Avahane*, (1968). *Daw Da Jing*, his translation of Lao Tse's *Tao Te Ching*, came out in 1994. He has edited *Kannada Kavya* (1992) for National Book Trust, India. His short stories, poems and essays have been collected in the omnibus volumes, *Aidu Dashakada Kathegalu*, (Collected Stories, 2000) and *Eevareginal Kavithegalu* (Collected Poems, 2001) and *Kannada, Karnataka* (Selected Essays, 2001.)

Bharatipura and *Avasthe* have been translated into Hindi, Malayalam and English. *Bhava*, and a collection of his stories, *The Stallion of Sun and Other Stories* (1999) have also come out in English translation. *Divya* has been translated into Malayalam.

He has made presentations in more than one hundred important international and national seminars. Delivered talks in a number of seminars at Bangalore University on major Kannada writers. Spoken extensively on contemporary issues, participating in literary and political conferences in Kerala and delivered a series of speeches on Civil Liberties as General Secretary of the Karnataka Unit of the People's Union of Civil Liberties. Debates he carried out with writers and public figures on the future of Karnataka and its language and culture in the context of globalisation and interviews with writers such as Masti Venkatesha Iyengar, Gopalakrishna Adiga, Shivram Karanth and R.K. Narayan in All India Radio and Doordarshan programmes are memorable.

Among the novels of U.R.Anantha Murthy, *Samskara* is the most discussed. This first novel launched him as a world-class author, lauded by personalities like Erick Erickson and V.S.Naipaul. A highly controversial work ever since its first publication, it is hailed variously as an iconoclastic work, and as a path-breaking novel. A.K.Ramanujan describes it as, "an allegory rich in realistic detail." He explains: "As in an early Bergman film, the characters are frankly allegorical, but the setting is realistic. An abstract human theme is reincarnated in just enough particulars of a space, a time, a society." The open-ended novel is a clarion call for change, revealing the ardent expectancy of a revolutionary who believes that breaking with an established order is worthwhile, if a new and better order can be ushered in." Translations of *Samskara* have appeared in English, Hindi, Malayalam, Bengali, Marathi, Tamil, French, Russian, German Hungarian and Swedish. The novel has been prescribed as a text-book in several universities in India and abroad. In 1970, *Samskara* was made into a film that ushered in the Indian New Wave Cinema of the South and won the President's Gold Medal; and the author got the Best Story Award.

In *Bharathipura*, Anantha Murthy progresses from the allegorical and existentialist approaches he employed in *Samskara* and catches the bull of realism by its horns. "...The novel is essentially a critique of the limitations of the radical middle classes, claiming an exclusive and sympathetic right to change the nation," said D.R.Nagaraj, the famed Kannada

हैं। यह उपन्यास मध्यवर्ग की सीमाओं की एक समालोचना है जो राष्ट्र को बदलने के एकमात्र अधिकार का दावा करता रहा है। यह कहना है प्रसिद्ध कन्नड आलोचक डी.आर. नागराज का। अनंतमूर्ति भारतीपुरा में जिस प्रतिबोधी मनोवैज्ञानिक तकनीक का उपयोग करते हैं, *अवस्थे* में वह अपनी पूर्णता में प्रतिफलित होती है। इसकी विषयवस्तु सार्वभौम है, और यह व्यावहारिक राजनीति के गंदे खेल में लाचार बने व्यक्ति की प्रसन्नता के बारे में है।

कहानीकार के रूप में अनंतमूर्ति का क़द उनके उपन्यासकार की ख्याति के आगे दब-सा गया है। 'मौनी' जैसी आपकी कहानियाँ अपने उद्देश्य और अनुभूति की तीव्रता को लेकर सराही गई हैं।

अनंतमूर्ति के तीक्ष्ण समालोचनात्मक लेखन ने आधुनिक कर्नाटक के साहित्यिक आस्वाद को आकार दिया है। बी.सी. रामचन्द्र शर्मा ने लगभग दो दशक पूर्व लिखा था : "एक समालोचक के रूप में अनंतमूर्ति की भूमिका आधुनिक कन्नड समालोचना की दिशा तय करने में प्राथमिक महत्त्व की रही है। उन्होंने कुछ मौलिक निर्मितियाँ पैदा कीं और अंग्रेज़ी साहित्य के अपने विशद ज्ञान का उपयोग वर्तमान साहित्य रचना के मूल्यांकन के लिए किया। युवतर समालोचकों पर उनका प्रभाव प्रचुर मात्रा में है। वे एक प्रेरणा प्रदान करनेवाले अध्यापक और संपादक रहे हैं।" एक कन्नड त्रैमासिक *रुजुवातु* के अनुसार "सर्जनात्मक लेखन के क्षेत्र में अपनी प्रयोगशीलता और विक्षुब्धकर सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रश्नों पर खुले मस्तिष्क से संवाद द्वारा "उन्होंने कर्नाटक की कई पीढ़ियों के लेखकों और समालोचकों को प्रभावित किया है। अपने अधिकांश समकालीनों से अलग हटकर जो अपने आरंभिक कार्यजीवन के आधुनिकतावादी साँचे से बाहर नहीं आ सके, अनंतमूर्ति निरंतर सर्जनात्मक बोध के नए क्षितिजों की ओर बढ़ते रहे। उनके समालोचनात्मक औजार आश्चर्यजनक ढंग से देसी हैं और उनकी जड़ें कन्नड संस्कृति में गहरे धँसी हुई हैं। जबकि आज के अधिकांश अकादमिक समालोचक भारतीय लोकाचार को पाश्चात्य समालोचनात्मक प्रविधियों से परिभाषित करने की कोशिश करते हैं और स्वयं को अपरिचित और दुःसाध्य स्थितियों में पाते हैं, अनंतमूर्ति हमारे समय के जटिल सांस्कृतिक प्रश्नों को पाश्चात्य और पूर्वी 'एप्रोच' के स्वस्थ्य मिश्रण से हल करते हैं। उनके पास हमेशा एक स्पष्ट और सबल तर्क होता है जिसे वह विपक्ष के सामने रखते हैं। इस आदमी के करिश्मे को उसके चिन्तन की सुस्पष्टता और उस साहस की शब्दावली में व्याख्यायित किया जा सकता है, जिसके साथ वह इसे अभिव्यक्त करते हैं।

आपके अंग्रेज़ी निबंध विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं जैसे *ट्रांसअटलांटिक रिव्यू, ह्यूमनिस्ट रिव्यू, न्यू क्वेस्ट, इंडियन पेन, वागर्थ, लिटरेरी क्राइटेरियन* और *आयोवा रिव्यू* आदि में और कई राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। इनका एक चयन ए.जे. थामस के संपादन में *लिटरेचर एंड कल्चर : एस्सेज इन इंग्लिश* शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

अनंतमूर्ति देश की प्रतिष्ठित संस्थाओं की शासी समितियों में रहे हैं, यथा—न्यासी, भारत भवन, अध्यक्ष, हाई पावर्ड रिव्यू कमेटी फॉर ज़ोनल कल्चरल सेंटर्स, अध्यक्ष, रिव्यू कमेटी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, चयन परिषद, के.के. बिड़ला फ़ाउंडेशन, नई दिल्ली, एकेडेमिक कौंसिल, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, सदस्य, जेनरल कौंसिल, 'परिसर', मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, बी.डी. गोयनका पुरस्कार समिति, कैरियर, पुरस्कार चयन समिति, बोर्ड ऑफ़ स्कूल ऑफ़ ह्यूमिनिटीज, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली, एकेडेमिक कौंसिल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, एडवाइजरी

critic. The perceptive psychological techniques Anantha Murthy employs in *Bharathipura* are honed to perfection in *Avasthe.* The theme is universal in that it is all about the happiness of the individual pitted against the dirty business of practical politics.

His stature as a short-story writer is perhaps eclipsed by his fame as a novelist; his stories like "Mauni" are celebrated for the purpose and intensity he has put into writing them.

Anantha Murthy's extremely sharp critical writings moulded the literary taste of modern Karnataka. B.C.Ramachandra Sharma wrote nearly two decades ago: "Anantha Murthy's role as a critic has been of seminal importance in shaping the direction of modern Kannada criticism. He has generated a few original constructs and ably used his vast knowledge of English literature to assess the present literary output. His influence on younger critics has been considerable." As an inspiring teacher and editor, since 1981, of *Rujuvathu,* a Kannada quarterly devoted, "to experimentation in creative writing and open-minded dialogues on disturbing socio-political and cultural questions," he has influenced generation after generation of writers and critics in Karnataka. Unlike most of his contemporaries who could not grow out of the modernist mould of their early career, Anantha Murthy was ever on the move towards new horizons of creative perception. His critical tools are strikingly indigenous, deeply rooted in Kannada culture. When most of today's academic critics try to interpret Indian ethos in terms of western critical methods and find themselves in truly unfamiliar and unmanageable situations, Anantha Murthy tackles our complex cultural questions with a healthy mixture of western and eastern approaches. He always has a lucid, bold argument which he neatly puts across to the other side. The charisma of the man can be explained in terms of the clarity of his thought and the courage with which he expresses it.

His essays in English have appeared in various international journals like *Transatlantic Review, Humanist Review, New Quest, Indian Pen, Vagartha, Literary Criterion* and *Iowa Review* etc., and in many national dailies and magazines, a selection of which came out in a volume, *Literature and Culture: Essays in English*, edited by A.J.Thomas (Papyrus, Kolkata, 2002).

Anantha Murthy has been serving in varying capacities in the governing bodies of prestigious institutions in the country-- Trustee, Bharat Bhavan, Chairman, High-powered Review Committee for Zonal Cultural Centres, Chairman, Review Committee, Indian Institute of Advanced Study, Shimla, Chayan Parishad of K.K. Birla Foundation, New Delhi, Academic Council, Visva-Bharati, Shantiniketan, Member of the General Council, "Parisar" Ministry of Human Resource Development, Govt. of India, B.D. Goenka Award Committee, CAREER Award Selection Committee, University Grants Commission's Board of School of Humanities, Indira Gandhi National Open University, Delhi,Academic Council, Jawaharlal Nehru University, New Delhi,Advisory Panel, *Vagarth* (journal),Chairman, Comparative Literature Association of India, General Assembly, Indian Council for Cultural Relations, New Delhi, Governing Body, Indian Institute of Advanced Study, Shimla,

पैनेल, *वागर्थ* (पत्रिका), अध्यक्ष, कंपरेटिव लिटरेचर एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया, जेनरल एसेम्बली, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, नई दिल्ली, गवर्निंग बाडी, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी, शिमला, इंटरनेशनल एडवाइज़री बोर्ड, इनोस्त्रान्या (सोवियत साहित्य मासिक), मास्को, अध्यक्ष, टास्क फोर्स आन हायर एजूकेशन, स्टेट प्लानिंग बोर्ड, केरल, सदस्य, बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स (वि.अ.आ. द्वारा नामित), सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंग्लिश एंड फॉरेन लैंग्वेजेज, हैदराबाद, गवर्निंग बाडी, इंस्टीट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट इन गवर्नमेंट, तिरुवनंतपुरम।

आपको कई अंतर्राष्ट्रीय फ़ेलोशिप प्रदान किए गए हैं जिसमें सर्जनात्मक लेखन के लिए होमी भाभा फ़ेलोशिप, द फुलब्राइट फ़ेलोशिप और आयोवा विश्वविद्यालय, अमेरिका में लेखन के लिए दी गई मानद फ़ेलोशिप शामिल हैं। अनंतमूर्ति देश-विदेश के कई विश्वविद्यालयों में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर रहे हैं; यथा हैदराबाद विश्वविद्यालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, कॉर्नेल विश्वविद्यालय, पेन्सिलवानिया विश्वविद्यालय, टफ्ट्स विश्वविद्यालय, मैडिसन विश्वविद्यालय, शिकागो विश्वविद्यालय, राइटर इन रेजिडेंस, टेक्सास विश्वविद्यालय, ऑस्टिन, आयोवा विश्वविद्यालय (सभी अमेरिका में), टुबिंजन विश्वविद्यालय, जर्मनी आदि।

1970 में फ़िल्म *संस्कार* के लिए आपको सर्वोत्कृष्ट कथा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1978 में *घटश्राद्ध* के लिए पुनः आपको श्रेष्ठ कथा पुरस्कार मिला और उसके बाद *बारा* के लिए। आपको कथा साहित्य के लिए कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार (1983), साहित्य के लिए कर्नाटक सरकार पुरस्कार (1984), साहित्य के लिए मास्ति प्रशस्ति (1994), ज्ञानपीठ पुरस्कार (1995), शिखर सम्मान, हिमाचल प्रदेश सरकार (1998), केलाडी शिवप्पा नायका प्रशस्ति, वीलेज केलाडी (2002), गणकृष्टि पुरस्कार, कोलकाता (2002), रचना समग्र सम्मान, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता (2003) और सर एम. विश्वश्वरय्या प्रशस्ति (2003) आदि साहित्यिक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आपको हार्मनी एवार्ड (1990), रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता की डी.लिट. की मानद उपाधि (1995), पद्मभूषण (1998), केंद्रीय तिब्बती शिक्षा संस्थानम्, सारनाथ, वाराणसी के वाक्पति (मानद डी.लिट) से भी सम्मानित किया जा चुका है।

अग्रहार में जहाँ आप बड़े हुए, बालक अनंतमूर्ति का दिन जप से शुरू होता था और फिर मठ में संस्कृत पाठशाला में पढ़ाई। तत्पश्चात् उन्हें 6 कि. मी. दूर विद्यालय जाना पड़ता। विद्यालय में एक शिक्षक थे जो पुराणों की कहानियों की सच्चाई के बारे में प्रश्न करते। स्कूल से लौटते समय उन्हें एक व्यक्ति मिलता जो बर्नार्ड शॉ के बारे में बातें करता; यदि वह बातें नहीं करता तो वह अपनी अंग्रेज़ी सुधारने के लिए बी.बी.सी. के कार्यक्रम सुना करता। अग्रहार लौटने पर, वे प्रायः पंडितों के मध्य होनेवाले शास्त्रार्थ के साक्षी बनते जो प्राचीन ग्रंथों की व्याख्या को लेकर होते। उनकी बहस बाहर से आनेवाले विद्वानों और समाज सुधारकों से भी होती। बहस का मुद्दा जाति व्यवस्था से लेकर विकास के सिद्धांत तक होता और इस पर तर्क होता कि पृथ्वी गोल है या चपटी। अनंतमूर्ति का कहना है कि "इस प्रकार मैं एक दिन की अवधि में ही उतनी यात्रा करता जितनी कि पश्चिम ने सदियों में की होगी...मैं गैलीलियो का समकालीन हो सका।" सदियों के वह असमंजसकारी सहअस्तित्व और काल का सत्व, अनंतमूर्ति की कृतियों के माध्यम से साँस लेता है।

इस बहुमुखी प्रतिभावाले रचनाकार, यू.आर. अनंतमूर्ति को अपना सर्वोच्च सम्मान, महत्तर सदस्यता, प्रदान करते हुए साहित्य अकादमी स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही है।

International Advisory Board, *Inostrannya* (Soviet Literature Monthly), Moscow, Chairman, Task Force on Higher Education, State Planning Board, Kerala, Member, Board of Governors (UGC nominee), Central Institute of English & Foreign Languages, Hyderabad, Member,Governing Body and Institute of Management in Government, Thiruvananthapuram.

Recipient of several international fellowships such as Homi Bhabha Fellowship for Creative Writing, the Fulbright Fellowship and Honorary Fellowship in Writing in the University of Iowa, U.S.A. etc., Anantha Murthy has also been Visiting Professor in several universities at home and abroad, like University of Hyderabad, Shivaji University, Kolhapur, Jawaharlal Nehru University, New Delhi, Cornell University, University of Pennsylvania, Tufts University, University of Madison, University of Chicago, Writer in Residence, University of Texas at Austin, University of Iowa on several stints as Visiting Writer and Visiting Professor (all in USA), University of Tubingen, (Germany) and others.

Beginning with his Best Story Award for *Samskara*, the film, in 1970, many awards and honours came in search of him. In 1978, he again won the Best Story Award for *Ghatashraadha* and then for *Bara*. These were followed by literary awards like Karnataka Sahitya Akademi Award for Fiction (1983), the Karnataka Government Award for Literature(1984), Masti Prashasti for Literature(1994), Jnanpith Award(1995) Shikhar Samman, Himachal Pradesh Government(1998), Keladi Shivappa Nayaka Prashasti, Village Keladi,(2002), Ganakrishti Award, Kolkata(2002), Rachana Samagra Samman, Bharatiya Bhasha Parishad, Kolkata(2003) and Sir M.Visweswarayya Prashasti 2003. Several honours were conferred on him including the Honorary Fellowships he received as listed above, the Harmony Award (1990), D.Litt, *honoris causa* (1995), by Rabindra Bharati University, Kolkata, Padma Bhushan (1998), "Vakpathi"(Hon. D. Litt) and Kendriya Uchcha Tibatti Shiksha Samsthanam, Saranath, Varanasi.

At the *agrahara* where he grew up, the day of the boy Anantha Murthy would begin with *japa*, and then the lessons at the Sanskrit *Pathsala*. He would then proceed to the school six kilometres away. In the school, there was a teacher who questioned the veracity of the stories of the Puranas. On the way back from the school, he, along with other boys, would listen to a man who talked about Bernard Shaw; if not talking, the man would be listening to the broadcast of BBC programmes to maintain his English immaculate. Back at the *agrahara*, he would often witness fierce debates between pundits on the interpretation of ancient texts and their discussions with visiting scholars and reformists on topics ranging from the caste system to the Theory of Evolution, and arguments like whether the earth was round or flat. "Thus I traversed what would be centuries of the West within the span of a single day.... I could have been a contemporary of Galileo!" says Anantha Murthy. Something of this bewildering co-existence of the centuries, the essence of Time, breathes through Anantha Murthy's works.

Sahitya Akademi is honoured by conferring its highest honour, the Fellowship, on this versatile writer, educationist and cultural figure, U.R.Anantha Murthy.